IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हरिवंश राय बच्चन का 'मधुशाला' निहित भावदर्शन

(The underlying philosophy of Harivansh Rai Bachchan's 'Madhushala')

Author – Kesha Ram Chouhan, Shri Jain Terapanth, College, Ranawas, Marwar Junction, Pali, Rajasthan-306023

Abstract : हरिवंश राय बच्चन का 'मधुशाला' केवल एक काव्य रचना नहीं, बल्कि जीवन, मृत्यु, आत्म–चिंतन और भक्ति का गहरा प्रतीक है। इस कविता के माध्यम से बच्चन ने मानव जीवन की जटिलताओं और अस्तित्व के अनेक पहलुओं को सरल और प्रभावशाली तरीके से व्यक्त किया है। 'मधुशाला' का प्रतीकात्मक संदर्भ शराब और मदिरा से जुड़ा होने के बावजूद, इसका वास्तविक उद्देश्य जीवन के सत्य, संघर्ष, और आत्ममुक्ति की खोज को उजागर करना है। काव्य में 'मधुशाला' (शराब की दुकान) के माध्यम से शराब को जीवन के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ हर व्यक्ति अपने जीवन की उलझनों और सवालों का हल ढूँढने की कोशिश करता है। हर हाला (कप) और मधु (शराब) के माध्यम से व्यक्ति आत्म–बोध, आनंद और दुख के चक्र को समझने की कोशिश करता है। इस रचना में बच्चन ने भक्ति और जीवन दर्शन को गहराई से जोड़ा है। 'मधुशाला' में शराब के नशे के साथ–साथ, एक अनदेखे संतोष और साधना की ओर भी संकेत किया गया है। वे जीवन के विभिन्न पहलुओं को स्वीकार करते हुए उसे एक उत्सव की तरह जीने की बात करते हैं, जहाँ जीवन और मृत्यु के द्वंद्व को समझते हुए मनुष्य आत्मज्ञान की ओर बढ़ता है। अंततः, 'मधुशाला' न केवल एक काव्यात्मक रचना है, बल्कि यह आत्म–ज्ञान, जीवन के उद्देश्य और भक्ति के एक गहरे दर्शन को प्रस्तुत करती है। इस काव्य में बच्चन ने अद्‌भुत रूप से जीवन की द्वैतता और उसकी कठिनाइयों को स्वीकार करते हुए उसे एक साधना के रूप में देखा है।

Keywords : रहस्यवाद, जीवन दर्शन, प्रतीकात्मकता, आत्मानुभूति, आशावाद, श्रृंगारिकता, आध्यात्मिकता, मदिरा प्रतीक, यौवन, मृत्यु विमर्श, प्रेमानुभूति, संघर्ष, सामाजिक चेतना, वेदना, सौंदर्यबोध, काव्य माधुर्य, मानवतावाद।

Article : 'मधुशाला' कविता में मधुशाला जीवन का प्रतीक है। जिस प्रकार मधुशाला में विभिन्न प्रकार की मदिरा मिलती है, उसी प्रकार जीवन में भी सुख–दुख, आशा–निराशा, प्रेम–विरह आदि विभिन्न रंग होते हैं। मधुशाला हमें सिखाती है कि जीवन में आने वाले हर अनुभव को स्वीकार करना चाहिए और उनसे सीख लेनी चाहिए। हरिवंश राय बच्चन की कालजयी कृति 'मधुशाला' हिंदी साहित्य की सबसे लोकप्रिय और चर्चित कविताओं में से एक है। इस कविता में कवि ने जीवन के विभिन्न पहलुओं को मधु, मदिरालय, मधुबाला और प्याला के प्रतीकों के माध्यम से बड़ी ही सुंदरता और गहराई से व्यक्त किया है।

जीवन का प्रतीक – हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' केवल मदिरा का गुणगान करने वाली काव्य रचना नहीं है, बल्कि यह जीवन के गहरे दार्शनिक अर्थों को उजागर करने वाली उत्कृष्ट कृति है। इस काव्य में मधुशाला (शराबखाना) जीवन का प्रतीक बनकर उभरती है, जिसमें मदिरा मानव अनुभवों और भावनाओं को दर्शाती है, साकी (प्याला परोसने वाला) भाग्य या ईश्वर का रूप लेता है, और हाला (मदिरा)

आनंद, प्रेम, पीड़ा, ज्ञान और अनुभूति का प्रतीक बनती है। बच्चन जी ने मधुशाला के माध्यम से यह संदेश दिया कि जीवन एक निरंतर प्रवाहमान यात्रा है, जिसमें सुख–दुःख, सफलता–विफलता, प्रेम–विरह, और मृत्यु का खेल चलता रहता है। मधुशाला का हर व्यक्ति के लिए अर्थ अलग–अलग हो सकता है, जैसे किसी के लिए यह प्रेम का प्रतीक है, तो किसी के लिए यह आत्मज्ञान और आत्मानुभूति का। इसमें निहित जीवन–दर्शन बताता है कि व्यक्ति को बिना किसी पूर्वाग्रह के, खुली भावना और मस्ती से जीवन जीना चाहिए। जिस प्रकार मदिरा का स्वाद हर व्यक्ति के लिए भिन्न हो सकता है, वैसे ही जीवन के अनुभव भी प्रत्येक के लिए अलग–अलग होते हैं। कवि ने मधुशाला के प्रतीकों के माध्यम से यह भी बताया कि हमें रूढ़ियों, धार्मिक कर्मकांडों और समाज द्वारा बनाए गए बंधनों से मुक्त होकर अपने जीवन का आनंद लेना चाहिए। अतः, 'मधुशाला' केवल एक कविता नहीं, बल्कि जीवन का प्रतीक है, जो मनुष्य को उसके अस्तित्व, अनुभव और अंततः उसकी मृत्यु तक की यात्रा का दर्शन कराता है। हरिवंश राय बच्चन की कालजयी रचना 'मधुशाला' में मदिरा केवल एक पेय पदार्थ नहीं, बल्कि गहरे दार्शनिक अर्थों से ओतप्रोत एक प्रतीक के रूप में उभरती है। यह आनंद, उत्साह, उल्लास और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है। बच्चन जी ने मदिरा को सांसारिक जीवन की विभिन्न अनुभूतियों, इच्छाओं और भावनाओं से जोड़ा है, जिससे यह प्रतीक आत्मानुभूति और उत्सव का माध्यम बन जाता है। कवि ने मदिरा को आनंद और मस्ती का प्रतीक बनाकर यह संदेश दिया कि जीवन को बोझ समझने के बजाय इसे खुलकर जीना चाहिए। जिस प्रकार मदिरा पीने के बाद व्यक्ति चिंता और दुखों से मुक्त होकर एक आनंदित अवस्था में प्रवेश करता है, उसी प्रकार 'मधुशाला' जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देती है। बच्चन जी बार–बार यह कहते हैं कि जीवन में आनंद ढूँढ़ना हर व्यक्ति का अधिकार है, और मधुशाला इस आनंद की खोज का माध्यम है। मदिरा प्रेम और सौंदर्य की भावना को प्रकट करने का भी माध्यम बनती है। कवि कहते हैं कि प्रेमी जब अपनी प्रेमिका की आँखों में देखता है, तो उसे मदिरा के नशे जैसा सुखद एहसास होता है। इसी तरह, जीवन में प्रेम, सौंदर्य और आकर्षण को महत्व देने की प्रेरणा भी 'मधुशाला' देती है।

आत्मानुभूति और आध्यात्मिक उन्मुक्तता का प्रतीक – बच्चन जी की मधुशाला केवल भौतिक सुखों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक आनंद का भी प्रतीक है। मदिरा का प्रयोग उन्होंने आध्यात्मिक उन्मुक्तता को दर्शाने के लिए किया है, जहाँ व्यक्ति बाहरी रूढ़ियों और धर्मों के दिखावे से मुक्त होकर स्वयं के भीतर के आनंद को खोजता है।

बंधनों से मुक्ति और जीवन को खुलकर जीने का संदेश – कवि मदिरा के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि जीवन को किसी बंधन में बाँधकर नहीं, बल्कि उन्मुक्त होकर, बिना किसी डर या अपराधबोध के जीना चाहिए। उनकी मधुशाला समाज द्वारा बनाई गई नैतिक और धार्मिक सीमाओं को तोड़कर स्वतंत्रता की भावना को प्रकट करती है। हरिवंश राय बच्चन ने 'मधुशाला' में मदिरा को मात्र नशे का साधन नहीं, बल्कि एक दर्शन का प्रतीक बनाया है। यह जीवन की खुशियों, प्रेम, सौंदर्य और आत्मानुभूति का प्रतिनिधित्व करती है। यह पाठक को प्रेरित करती है कि वह अपने जीवन में उत्साह और आनंद का संचार करे, अपने दुखों को भुलाकर एक मस्ती भरे दृष्टिकोण के साथ जीवन व्यतीत करे। इस प्रकार, मधुशाला केवल एक काव्य संग्रह नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला का एक दार्शनिक प्रतीक बन जाता है।

मधुबाला : प्रेरणा और प्रेम का प्रतीक – हरिवंश राय बच्चन की कालजयी रचना 'मधुशाला' केवल मदिरा या मधुशाला का वर्णन भर नहीं है, बल्कि यह गहरे दार्शनिक प्रतीकों से समृद्ध एक अद्वितीय काव्य संग्रह है। इस रचना में मधुबाला केवल मदिरा परोसने वाली कोई स्त्री नहीं, बल्कि प्रेरणा, प्रेम, सौंदर्य और अभिलाषा का प्रतीक बनकर उभरती है। वह न केवल कवि की कल्पनाओं में एक नायिका के रूप में स्थान पाती है, बल्कि जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मिक उल्लास का भी प्रतिनिधित्व करती है।

मधुबालाः प्रेम और सौंदर्य की प्रतिमूर्ति – बच्चन जी की मधुशाला में मधुबाला प्रेम की भावना को दर्शाती है। जिस प्रकार एक प्रेमी अपनी प्रेमिका की आँखों में डूबकर आनंद का अनुभव करता है, उसी प्रकार मधुशाला में मधुबाला प्रेम और आत्मीयता का प्रतीक बन जाती है। वह केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित नहीं रहती, बल्कि मनुष्य के भीतर प्रेम, कोमलता और आत्मिक अनुभूति का संचार करती है।

प्रेरणा और उत्साह की कारक – मधुबाला केवल प्रेम की ही नहीं, बल्कि प्रेरणा और उत्साह की भी प्रतीक है। कवि के अनुसार, जब वह मधुबाला से मदिरा प्राप्त करता है, तो वह एक नए जोश और उमंग से भर उठता है। यह इंगित करता है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए किसी प्रेरणा स्रोत की आवश्यकता होती है, और मधुबाला इस प्रेरणा का प्रतीक है।

मोहब्बत और आत्मानुभूति का प्रतीक – मधुबाला केवल एक भौतिक अस्तित्व वाली स्त्री नहीं है, बल्कि वह मनोभावों और इच्छाओं का रूपक भी है। यह प्रेम की उस अवस्था को दर्शाती है, जहाँ आत्मा और हृदय का मेल होता है। बच्चन जी के अनुसार, जब कोई व्यक्ति सच्चे प्रेम में होता है, तो वह अपने अस्तित्व की गहराइयों को महसूस करता है, और यही आत्मानुभूति उसे मधुशाला की यात्रा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

आध्यात्मिक प्रेम और विरह का स्वर – मधुशाला में मधुबाला आध्यात्मिक प्रेम और विरह का भी प्रतीक बनती है। कभी वह मनुष्य की आध्यात्मिक यात्रा में उसकी संगिनी बनती है, तो कभी विरह और तड़प का अनुभव कराती है। जिस प्रकार साकी मदिरा परोसता है, उसी प्रकार मधुबाला भी प्रेम और आत्मिक संतोष का अनुभव प्रदान करती है, लेकिन जब वह दूर होती है, तो व्यक्ति पीड़ा और तृष्णा से भर उठता है।

पारंपरिक सामाजिक सीमाओं से परे स्वतंत्रता का प्रतीक – बच्चन जी की मधुशाला में मधुबाला रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों से मुक्त प्रेम का भी प्रतीक है। यह एक ऐसा प्रेम है, जो समाज की सीमाओं को नहीं मानता, बल्कि मुक्त हृदय से बहता है। मधुबाला केवल एक परंपरागत नारी नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और उन्मुक्त चेतना का स्वरूप है, जो प्रेम को किसी बंधन में नहीं बांधती।

हरिवंश राय बच्चन ने 'मधुशाला' में मधुबाला को प्रेरणा, प्रेम, सौंदर्य और आत्मानुभूति का प्रतीक बनाया है। वह केवल एक पात्र नहीं, बल्कि प्रेम की गहराइयों, उत्साह और आध्यात्मिक तृप्ति की प्रतीक है। वह जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होती है और मनुष्य को बताती है कि प्रेम, प्रेरणा और आत्मानंद ही जीवन का वास्तविक सार हैं। इस प्रकार, मधुशाला में मधुबाला सौंदर्य और प्रेम की प्रेरणा के रूप में प्रतिष्ठित होती है, जो जीवन को मधुर और सार्थक बनाने में सहायक होती है।

प्यालाः जीवन के अनुभवों का प्रतीक – प्याला इस कविता में जीवन के अनुभवों का प्रतीक है। जिस प्रकार प्याले में मदिरा भरी होती है, उसी प्रकार हमारे जीवन में भी विभिन्न प्रकार के अनुभव होते हैं। प्याला हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन के हर अनुभव को संजोकर रखना चाहिए।

हरिवंश राय बच्चन की कालजयी काव्य रचना 'मधुशाला' प्रतीकों का अद्‌भुत संकलन है, जिसमें मधुशाला, मदिरा, साकी और प्याला जैसे तत्व गहरे दार्शनिक भावों को प्रकट करते हैं। इस रचना में प्याला केवल मदिरा पीने का साधन नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों, उपलब्धियों, संघर्षों और अनुभूतियों का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि प्रत्येक व्यक्ति जीवन के इस प्याले से अपने अनुभवों का रसपान करता है और वही उसके जीवन की दिशा तय करता है। जिस प्रकार प्याले में भरी हुई मदिरा का स्वाद हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, उसी प्रकार जीवन के अनुभव भी प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न होते हैं। कोई जीवन के प्याले में आनंद और सफलता का स्वाद चखता है, तो कोई दुःख और असफलता का। बच्चन जी इस भाव को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जीवन में जो कुछ भी मिलता है, वह हमारे अनुभवों का ही परिणाम है, और हमें इन्हें पूर्ण समर्पण और संतोष के साथ स्वीकार करना चाहिए। प्याला केवल सुखद अनुभवों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह संघर्ष और जीवन में आने वाली चुनौतियों का भी प्रतीक है। जिस

प्रकार मदिरा का प्याला खाली होते ही फिर से भरने की इच्छा होती है, उसी प्रकार जीवन में जब कोई कठिनाई आती है, तो मनुष्य उसे पार करके नए अनुभवों की ओर बढ़ता है। मधुशाला हमें यह सिखाती है कि चाहे जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, हमें हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि हर चुनौती को एक नए अनुभव के रूप में स्वीकार करना चाहिए। बच्चन जी की दृष्टि में प्याला केवल आनंद और उत्साह का ही प्रतीक नहीं है, बल्कि संयम और संतुलन की भी सीख देता है। यदि कोई व्यक्ति मदिरा का प्याला संतुलित मात्रा में ग्रहण करता है, तो वह आनंदित रहता है, लेकिन यदि वह सीमा पार कर जाता है, तो यह नशा उसे नुकसान पहुँचा सकता है। इसी प्रकार, जीवन में भी अनुभवों और इच्छाओं का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, ताकि हम न अति उत्साह में बहें और न ही दुखों से हार मानें।

साकीः मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत का प्रतीक – साकी इस कविता में मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन में हमेशा किसी न किसी का मार्गदर्शन लेते रहना चाहिए। साकी हमें प्रेरणा भी देता है कि हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए। साकी केवल मार्गदर्शन ही नहीं करता, बल्कि वह जीवन के प्रति उत्साह और उमंग को भी बनाए रखता है। जब व्यक्ति निराश होता है, तब साकी उसे पुनः खड़ा होने की प्रेरणा देता है और उसके प्याले को फिर से भर देता है, जिससे वह नई ऊर्जा और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सके। यह दर्शाता है कि हमारे जीवन में भी ऐसे प्रेरणास्रोत होते हैं, जो हमें कठिन समय में संभालते हैं और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। साकी केवल एक मार्गदर्शक ही नहीं, बल्कि प्रेम, स्नेह और आत्मीयता का भी प्रतीक है। वह हर व्यक्ति को समान रूप से प्याला भरकर देता है, बिना किसी भेदभाव के। यह दर्शाता है कि सच्चा प्रेम निष्कलंक और निःस्वार्थ होता है, जिसमें न कोई भेदभाव होता है, न कोई अपेक्षा। मधुशाला में साकी का प्रेम आध्यात्मिक प्रेम की तरह उभरता है, जहाँ वह व्यक्ति को अपने अंदर झाँकने और प्रेम की सच्ची भावना को अनुभव करने की प्रेरणा देता है। बच्चन जी ने साकी को एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में चित्रित किया है, जो व्यक्ति को संसारिक मोह–माया से परे आत्मज्ञान की ओर ले जाता है। साकी के हाथों से मिला प्याला केवल मदिरा नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुभूति और आत्मबोध का रस है। यह व्यक्ति को बताता है कि संसार में असली नशा केवल मदिरा का नहीं, बल्कि आत्मज्ञान, प्रेम और अनुभवों का होता है।

मधुशालाः एक दर्शन – 'मधुशाला' कविता हमें जीवन का एक नया दर्शन देती है। यह हमें सिखाती है कि जीवन एक मधुशाला के समान है, जिसमें सुख–दुख, आशा–निराशा, प्रेम–विरह आदि विभिन्न रंग होते हैं। हमें जीवन के हर रंग का आनंद लेना चाहिए और उनसे सीख लेनी चाहिए। 'मधुशाला' कविता हमें जीवन को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करती है।

बच्चन जी के अनुसार, मधुशाला केवल ईंट–पत्थरों से बनी कोई सराय नहीं, बल्कि यह संपूर्ण जीवन का रूपक है। जिस प्रकार मधुशाला में विभिन्न व्यक्ति आते हैं, मदिरा का रसास्वादन करते हैं और फिर चले जाते हैं, उसी प्रकार जीवन में लोग आते–जाते रहते हैं, अनुभवों का स्वाद चखते हैं और अंततः काल के प्रवाह में विलीन हो जाते हैं।

"मुसलमान औ' हिन्दू है दो, एक, मगर, उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय, एक, मगर, उनकी हाला;
दोनों रहते एक न जब तक मस्जिद–मंदिर में जाते,
बैर बढ़ाते मस्जिद–मंदिर मेल कराती मधुशाला।"

यहाँ मधुशाला जीवन की सार्वभौमिकता और समरसता को दर्शाती है, जहाँ हर व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के आता और एक समान अनुभव प्राप्त करता है।

मधुशालाः आत्मानुभूति और आध्यात्मिकता का प्रतीक – मधुशाला केवल भौतिक जीवन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह व्यक्ति को आत्मबोध और आध्यात्मिक चेतना की ओर भी प्रेरित करती है। यह जीवन के मोह–माया और सांसारिक बंधनों से ऊपर उठकर स्वयं के अस्तित्व को जानने और आत्मानंद प्राप्त करने का संदेश देती है। बच्चन जी की मधुशाला कहीं न कहीं कबीर और सूफी दर्शन की याद दिलाती है, जहाँ मदिरा केवल एक पेय नहीं, बल्कि ज्ञान, प्रेम और आत्मिक आनंद का प्रतीक बन जाती है।

संघर्ष और जीवन की नश्वरता का प्रतीक – मधुशाला का दर्शन यह भी बताता है कि जीवन संघर्षों और अस्थिरता से भरा हुआ है। जिस प्रकार प्याला खाली होते ही पुनः भरने की इच्छा होती है, उसी प्रकार मनुष्य निरंतर सुख और संतोष की खोज में लगा रहता है। लेकिन यह खोज अंतहीन है, क्योंकि जीवन स्वयं क्षणभंगुर है।

"मिटा सकी जो पीते–पीते मिट जाए मधु का प्यासा,
मेरी हाला से ना बचा जो बहक ना जाए पीने वाला;
मौत अगर मदिरालय आए, कह दो इतनी बात उसे,
जिएं जब तक पी सकें, जब मरें पड़े हो हाथों प्याला।"

यह पंक्तियाँ जीवन की नश्वरता को स्वीकार करने और हर क्षण को भरपूर जीने की प्रेरणा देती हैं।

प्रेम और सौंदर्य का प्रतीक – बच्चन जी के लिए मधुशाला केवल आत्मबोध और संघर्ष का ही नहीं, बल्कि प्रेम और सौंदर्य का भी प्रतीक है। इसमें प्रेम, आकर्षण, भावनाओं की तीव्रता और मनुष्य के हृदय में उठने वाली भावनाओं को भी महत्व दिया गया है।

सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त स्वतंत्र चेतना का प्रतीक – बच्चन जी की मधुशाला केवल एक दार्शनिक कृति ही नहीं, बल्कि यह सामाजिक बंधनों, पाखंड और धार्मिक रूढ़ियों पर भी कटाक्ष करती है।

"मंदिर–मस्जिद बैर कराते, मेल कराती मधुशाला।" यह पंक्तियाँ समाज में व्याप्त भेदभाव और धार्मिक कट्टरता पर चोट करती हैं और बताती हैं कि वास्तविक एकता और प्रेम वहीं है, जहाँ कोई बंधन नहीं, केवल आत्मीयता और उल्लास है।

निष्कर्ष : हरिवंश राय बच्चन का 'मधुशाला' एक ऐसी काव्य रचना है, जो जीवन की जटिलताओं और उसके अंतर्निहित सत्य को समझाने की ओर मार्गदर्शन करती है। इस कविता में शराब और मधुशाला का प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग करके बच्चन ने जीवन के भिन्न–भिन्न पहलुओं को उद्घाटित किया हैकृशराब का नशा, आत्ममुक्ति, भक्ति, और अंततः मृत्यु के साथ जीवन का समर्पण। मधुशाला केवल बाहरी उच्छृंखलता या आनंद की छवि नहीं प्रस्तुत करती, बल्कि यह एक साधना और आत्मज्ञान के मार्ग की ओर इशारा करती है। बच्चन का भावदर्शन हमें यह समझाता है कि जीवन को स्वीकारना और उसकी सच्चाइयों को पहचानना ही वास्तविक आत्मोत्थान है।

References :

1. शर्मा, , डॉ. प्रवीण (1999) बच्चन और उनका काव्य : अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली ।
2. भारती, पुष्पा (2007) हरिवंशराय बच्चन की साहित्य साधना : वाणि प्रकाशन नई दिल्ली ।
3. वर्मा, डॉ. नरेन्द्र देव (1979) प्रगीतकार बच्चन और अंचल : रचना प्रकाशन इलाहाबाद।
4. दीवान, डॉ. इन्दूबाला (1984) बच्चन अनुभूति और अभिव्यक्ति : सूर्य प्रकाशन, दिल्ली।